QUARTERLY NEWSLETTER OF ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

Swami Dayananda Saraswati

Vaidic Dhwani

VOL 9 # 3

EDITION 34

JULY-SEPTEMBER 2018

युद्ध द्वारा परमात्मा का बन्धुत्व

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥

– ऋ० ८।२१।१३; अथर्व० २०।११४।१

विनय – हे परमेश्वर ! तुम्हारे लिए न कोई शत्रु है और न कोई बन्धु है । तुम जिस उच्च स्वरूप में रहते हो वहाँ शत्रुता और बन्धुता का कुछ अर्थ ही नहीं । तुम्हारे लिए कोई नायक वा नियन्ता भी कैसे हो सकता है ? तुम्हीं एकमात्र सब जगत् के नियन्ता हो, नेता हो । तुम जन्म से, स्वभाव से ही ऐसे हो । 'जनुषा' का तात्पर्य यह नहीं कि तुम्हारा कभी जन्म होता है । तुम तो सनातन हो, सनातन रूप से ही शत्रुरहित और बन्धुरहित हो, पर निर्लिप्त होते हुए भी तुम हमारे बन्धुत्व (आपित्व) को चाहते हो और इस बन्धुत्व को तुम युद्ध द्वारा चाहते हो, युद्ध द्वारा ही चाहते हो । अहा ! कैसा सुन्दर आयोजन है ! तुम चाहते हो कि संसार के सब प्राणी सांसारिक युद्ध करके ही एक दिन तुम्हारे बन्धु बन जाएँ, तुम्हारे बन्धुत्व का साक्षात्कार कर लें । सचमुच बिना लड़ाई के मिली जीत सुलह, बिना संघर्ष के मिली प्रीति, बिना संग्राम के मिली मैत्री नीरस है, फीकी है, अवास्तविक है, उसका कुछ मूल्य नहीं है । बन्धुता तो अबन्धुता की, लड़ाई की सापेक्षता में ही अनुभूत की जा सकती है । इसलिए हे मेरे जगदीश्वर ! मुझे अब समझ में आता है कि तुमने कल्याणस्वरूप होते हुए भी इस अपने जगत् में दुःख, दर्द, दारिद्र्य, रोग, क्लेश, आपत्ति, उलझन आदि को क्यों उत्पन्न होने दिया है । अब मेरी समझ में आता है कि तुमने इन कठिनाइयों को खड़ा करके प्राणियों के जीवन को निरन्तर युद्धमय, संघर्षमय क्यों बनाया है । सचमुच, यह सब-कुछ तुमने इसीलिए किया है कि हम इन बाधाओं को जीतकर, इन कठिनाइयों, उलझनों को पार करके तेरे बन्धुत्व के रसास्वादन के योग्य बन जाएँ । तू तो अब भी हमारा बन्धु है । हममें से जो तेरे द्रोही कहे जाते हैं, जो नास्तिक हैं–उनका भी तू सदैव एक-समान बन्धु है (और वास्तव में किसी का भी बन्धु या शत्रु नहीं है) तो भी तेरी उस बन्धुता का अनुभव–तुझे बन्धु-रूप से पा लेने का परमानन्द–हमें तभी मिल सकता है जब हम संसार के इस परम विकट युद्ध को विजय करके तेरे पास आ पहुँचे । तू चाहता है कि आज जो तुझसे बहुत दूर है, तेरा कट्टर द्वेषी है, वह युद्ध करके एक दिन तेरा उतना ही नजदीकी और उतना ही कट्टर बन्धु बन जाए, अतः अब मैं तेरे बन्धुत्व पाने के समर में ही कमर कसे खड़ा हुआ अपने को पाता हूँ; जितनी बार मरूँगा इसी समर की युद्धभूमि में मरूँगा और अन्त में तेरे बन्धुत्व को पाकर ही दम लूँगा । यही तेरी इच्छा है, यही तेरी मुझसे प्रेममय इच्छा है ।

O resplendent Lord, since eternity you have neither rival nor any companion. Surely, you seek company of one who loves to fight against the odds of life.

Rigved 8.21, 13
- Swami Satya Prakash Saraswati
SatyakamVidyalankar

CONTENTS

Editorial 2
Pravachans 2
मन शान्त कैसे हो ? 3
Knowledge and Wisdom 5
Annadanam Seva 6
संसार का प्रयोजन 7
Satyarth Prakash The Light of Truth An Introduction 10
Workshop - All is Well 13
Thriving Adolescents 14
Gayatri Maha Yajna 15

ओ३म्
Arya Samaj For Vaidic Dharma

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Krinvanto Vishvam Aryam
Make this world noble

Editorial

The second mantra of Ishopnishad is a vast treasure of practical knowledge.

कुर्वन्नेवेह कर्माणि
जिजीविषेच्छतꣳसमाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म
लिप्यते नरे ॥

– यजु० ४०.२

It tells us to desire for a life of hundred years. This has meaning and significance only if we live performing actions for the full span of life. And full span, according to the Vedas is hundred years and must invest it with joy and zeal. The period of hundred years does not merely imply to the length of life but to its quality where knowledge and joy emerges as its dominant factor.

Imparting this quality to life is possible only through self-knowledge and increasing awareness. Ishopnishad, thus gives us that basic idea which constitutes the totality of vaidic outlook. Overcoming laziness and indifference, we must work in the light of the Divine, conduct our life under His guidance and thus make it aglow with purpose and significance. This all requires a positive outlook and strength that can invigorate the whole life. We must use our body as an instrument to work and through work, create beauty, wealth and welfare outside and moral and spiritual development within. Life gains richness given this spiritual direction. This happens only when we live and work without indulgence and then we can have delight of social existence i.e. Abhudya (अभ्युदय) and spiritual emancipation i.e. Nishreyas (निःश्रेयस) adding new vistas of beauty to our life. So, the secret of coming to grips with life is to work and work with a spirit of Detachment.

– Harsh Chawla

Pravachans

Sh Ravi Bhatnagar ji

Dr Arun Dev Sharma ji

Smt Usha Shastri ji

Smt Harsh Chawla

Sh Ashish Shrivastav

Swami Vedatmavesh ji

Acharya Vishwamitra ji

मन शान्त कैसे हो ?

– रवि भटनागर

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

– यजुः० ३४।१ ॥

प्रभु जागते हुए सदा जो, दूर दूर तक जाता है, सोते में भी दिव्य शक्तिमय कोसों दौड़ लगाता है । दूर दूर जाने वाले, तेजों का भी तेज निधान, नित्य युक्त शुभ संकल्पों से, यह मन मेरा हो भगवान् ।

हमारा मन जागृत अवस्था में दूर दूर तक जाता है तथा सोते हुए भी कोसों दौड़ लगाता है, तेजों का तेज हमारा मन, शिव संकल्पों वाला हो ।

इस मन्त्र में दो प्रमुख शब्द हैं – मन तथा शिवसंकल्प । शिवसंकल्प भी दो शब्दों से मिलकर बना है । शिव तो विशेषण है । जिसका अर्थ है किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा या निश्चय । वास्तव में संकल्प वह कल्पना है जिसमें वास्तविकता हो । किसी भी श्रेष्ठ लक्ष्य को हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब तक हम उसे प्राप्त करने का शिवसंकल्प धारण नहीं करते । किसी नियम को धारण करके उस पर कटिबद्ध हो जाने की मन में ठान लेना शिवसंकल्प है । इसके लिए ऊँचा मनोबल होना नितांत आवश्यक है । जब तक मन ठीक नहीं है, मन शांत नहीं है, तब तक हम किसी भी कार्य को सही ढ़ंग से नहीं कर सकते ।

एक बार राजकीय सेवा में मेरा स्थानांतरण एक बीहड़ तथा सुविधा रहित एवं दूरस्थ स्थान पर हो गया । विभागाध्यक्ष से स्थानांतरण निरस्त करवाने को मिला तो उन्होंने कहा कि वह संस्था बड़ी दयनीय अवस्था में है, उसे ठीक करो । मैंने कहा कि जब मेरा मन ही ठीक नहीं है तो संस्था कैसे ठीक कर लूँगा ?

आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि छोटी-छोटी बातों से हम अपना मन अशांत कर लेते हैं । मैं एक मित्र से पूछ बैठा कि "क्यों भाई ! बड़े व्यस्त दिखाई दे रहे हो" वह बड़े दुखी होकर बोले कि "क्या बतलाऊँ ? बहुत परेशान हूँ । घर-गृहस्थी, जी का जंजाल बन गई है । मेरा मन अशांत रहता है । पूरा परिवार और काम करने वाला मैं अकेला । कहाँ-कहाँ देखूँ ? पूरे दिन नमक, तेल, लकड़ी के चक्कर में लगा रहता हूँ ।"

एक दूसरे मित्र को उदास देखकर पूछ बैठा कि "क्यों भाई ! आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं ? बड़ा उदास चेहरा बनाकर बोले कि "क्या बतलाऊँ, कल छोटी बेटी का पैर साइकिल में फँस गया । मैं कॉलेज की समस्याएँ देखूँ या घर की ? अब बेटी को हॉस्पिटल ले जाना है ।" यह कहकर थके-थके से घर की ओर जाने लगे ।

इन छोटी-छोटी बातों से मन की अशांति केवल पुरुषों को हो, ऐसी बात नहीं, महिलाओं की स्थिति भी ऐसी ही है । कई महिलाएँ बैठी थी । उनमें से एक ने कहा कि "मेरे पोते का पालना टूट गया है" वहीं दूसरी महिला ने कहा कि "काम वाली बाई नहीं आई" वें सभी अपना दुःखड़ा रो रही थी ।

प्रश्न है कि मन की अशांति को कैसे दूर किया जाए ? यदि ध्यान से देखें तो मन को अशांत करने वाली या परेशान करने वाली बातें १८ घण्टे में कम ही होती हैं । (२४ घण्टे में ६ घण्टे तो सोने में बीत जाते हैं इसलिए १८ घण्टे ही कहा)। अधिकांश समय तो सामान्य ही रहता है । थोड़े से समय की परेशानी पूरे समय की सुख-शांति पर पूरी हावी हो जाती है ।

शिव संकल्प का प्रारम्भ यहीं से किया जाए कि प्रतिदिन जब हम प्रातःकाल सोकर उठते हैं तब ईश्वर को याद करते हैं या घर के बुजुर्गों का अभिवादन कर चरण-स्पर्श करते हैं । तब छोटा-सा संकल्प यह भी लें कि आज दिनभर में जितनी मन को अशांत

करने वाली बातें होंगी, मैं उनमें स्वयं के मन को शांत रखने का प्रयत्न करूँगा । चाहे कोई भी कार्य हो, एक-डेढ़ घण्टे बाद इस छोटे-से संकल्प को दोहरा लिया करें ।

रात्रि को बिस्तर पर जाने से पूर्व अर्थात् सोने से पूर्व तथा ईश्वर को याद करने से पूर्व आकलन अवश्य करें कि आज कितनी बार मन को अशांत करने वाली बातें या घटना हुई तथा कितनी बार मन को अशांत नहीं होने दिया तथा कितनी बार मन की अशांति को नहीं रोक सका । पर यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि मन की अशांति को दूर कर सकने के कारण रात्रि में मन और अशांत ना हो । एक डेढ़ महीने यह अभ्यास करने पर एक बड़ा परिवर्तन स्वयं ही अनुभव किया जाएगा ।

इसके साथ ही मन को अशांत करने वाले तत्त्वों के नियंत्रण की भी आवश्यकता है । जिनमें से एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है स्वभाव । स्वभाव का प्रभाव मन की शांति पर पड़ता है । अपने स्वभाव की छाया दूसरों पर पड़ती है तथा उसका प्रभाव अपने पर भी पड़ता है । 'आप भले तो जग भला । आप बुरे तो जग बुरा ।।'

एक ऐसे कमरे की कल्पना कीजिए कि जिसकी दीवारें दर्पण की बनी हों तथा उसमें सुंदर खाने-पीने की चीजें रखकर एक कुत्ते को प्रवेश करवा दिया जाए । कुत्ता दीवारों में अपना चित्र देखता है और सोचता है कि यहाँ इतने सारे कुत्ते हैं, जो खाने-पीने की सभी चीजें खा जाएँगे । उसे गुस्सा आ जाता है और गुस्से से वह भौंकने लगता है । दीवारों में लगे शीशों में दिख रहे सारे कुत्ते भी भौंकते हुए दिखाई देते हैं, उसका क्रोध बढ़ता है और अंत में थक कर वह कुत्ता मर भी सकता है । अब इसके स्थान पर इससे उल्टे स्वभाव के कुत्ते को प्रवेश कराते हैं । वह दूसरे कुत्तों को देखकर प्रसन्न होता है । वह अपनी पूछ हिलाता है तो दूसरे कुत्ते भी उसे पूछ हिलाते दिखाई देते हैं । वह सबको अपना मित्र समझता है । वह प्रसन्नता से पेट भर कर खाता है और आराम से सो जाता है ।

यह काँच का कमरा संसार है और कुत्ते की स्थिति हमारी है । यद्यपि कुत्ते से उपमा देना सही नहीं है पर यहाँ पर आशय स्वभाव से है । आप दूसरों को किस दृष्टिकोण से देखते हैं ? दूसरों की अच्छाइयाँ देखते हैं या बुराइयाँ, इसी से आपकी प्रकृति बनती है । यदि आप दूसरों के गुणों को देखेंगे तब आप प्रसन्नचित्त रहेंगे तथा दूसरों से प्रेम, स्नेह, सहृदयता, नम्रता तथा शालीनता का व्यवहार करेंगे तो आपका मन भी शांत रहेगा ।

कभी-कभी अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा, मानसिक अशांति का बहुत बड़ा कारण बन जाती है । दूसरों से तुलना करना मानसिक असंतुलन का कारण बनता है । सभी आंइस्टाइन या अंबानी नहीं बन सकते । अपनी शक्ति, सामर्थ्य, दक्षता को समझना चाहिए तथा उस पर भरोसा करना चाहिए एवं सकारात्मक सोच रखते हुए धैर्य के साथ काम करना चाहिए । दूसरों के प्रति सहृदयता तथा समानता का विकास आवश्यक है और इसके लिए जरुरी है ईर्ष्या, राग, द्वेष व क्रोध को मन से दूर रखना ।

ईर्ष्या – दूसरों की उन्नति देखकर स्वयं को वैसा ना कर सकने में उनके प्रति जलन रखना ईर्ष्या कहलाती है । कभी-कभी तो इसमें अपने भी पराए दिखने लगते हैं । 'उसकी कमीज अपनी कमीज से ज्यादा सफेद कैसे है ?' की भावना पतन की ओर ले जाती है । यह ध्यान रखना चाहिए कि घृणा घृणा से समाप्त नहीं होती ।

राग – पतंजलि कहते हैं – सुखानुशयी रागः । – योगदर्शनम् २.७ अर्थात् जिससे सुख मिलता है, उसका सानिध्य सदा बनाए रखने की इच्छा 'राग' कहलाती है । मेरी आयु संन्यास आश्रम की है तथापि अपने छोटे से पौत्र के प्रति राग बना रहता है । यह मानसिक दुःख का कारण बनता है ।

द्वेष – पतंजलि कहते है – दुःखानुशयी द्वेषः । – योगदर्शनम् २.८ अर्थात् जिनसे दुःख मिलता है, उनके प्रति कटुता की भावना रखना और उनसे अलग रहने की इच्छा रखना 'द्वेष' कहलाता है । इसी कारण हमारा जीवन कटुता और संघर्ष में ही समाप्त हो जाता है तथा हम प्रगति के पथ पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाते । गौरक्षा के नियम के विरोध में तमिलनाडु के कुछ लोग बड़े दुःखी हुए और द्वेष के कारण सड़कों पर गायों की हत्या करने लगे । यह है द्वेष का परिणाम ।

क्रोध – द्वेष का बड़ा भाई क्रोध है । गीता में योगेश्वर कृष्ण कहते हैं कि क्रोध से बुद्धि नष्ट होती है और यही सर्वनाश का कारण बनता है । अक्रोध से क्रोध पर जय प्राप्त होती है । शिवाजी के गुरु तुकाराम थे । तुकाराम की पत्नी ने एक गन्ने का गट्ठर बेचने के लिए उनको दिया और कहा कि जो पैसे मिलें उनसे घर का राशन ले आना, ताकि भोजन बन सके । तुकाराम गन्नों का गट्ठर लेकर बाजार जा रहे थे तो देखा कि कुछ बच्चे गन्नों को बड़ी ललचाई दृष्टि से देख रहे थे । तुकाराम ने बच्चों को एक-एक गन्ना दे दिया तथा एक गन्ना उनके पास शेष रहा । घर आकर उन्होंने सारी कथा अपनी पत्नी को सुना दी । पत्नी ने क्रोध में आकर उनसे गन्ना छीनकर उनकी पीठ पर दे मारा जिससे गन्ने के दो टुकड़े हो गए । तुकाराम ने मुस्कुराते हुए कहा कि कि देवी ! तुमने बहुत अच्छा काम किया । अब आधा गन्ना मैं चूस लूँगा और आधा गन्ना तुम चूस लेना, दोनों का पेट भर जाएगा ।

मन के द्वारा शिवसंकल्प धारण करने का अमोघ अस्त्र है – 'संतोष' । संतोष का अर्थ है – अपनी योग्यता, दक्षता, क्षमता तथा रुचि से पूर्ण पुरुषार्थ करके जो उपलब्धि होती है, उसमें प्रसन्न रहना ही संतोष कहलाता है और यह प्रसन्नता तभी मिलती है कि जब हमारा संकल्प हमारी योग्यता, क्षमता, दक्षता तथा रुचि के अनुसार हो ।

Knowledge and Wisdom

– Himanshu K Agrawal

Knowledge and Wisdom appear very similar. There are thick dividing lines though. All that we listen to, all that we see, all that we read, all that we write, gets stored in our memory and become a repository of our knowledge. It is the sum total of all the data that we have. It is the information and understanding that we get through our education, and through our awareness and by just living. It is what we get through study, research, investigation, observation, and experience.

Wisdom is the application of the knowledge that we have. It's a synthesis of our knowledge and our experiences with real life. Wisdom gives us the ability to judge the depth of our knowledge and how to apply it to our real life. Wisdom is an element of character that helps us to apply knowledge along with our insight and sagacity. Wisdom is the correct use of all the knowledge that we have gathered. It implies an ability to judge the knowledge that we have gathered on the touchstones of truth, of righteousness, of applicability to our circumstances. Knowledge provides us the potential power, and wisdom provides us the practical power.

In the twenty first century we are seeing a paradigm shift in the way knowledge is obtained and perused. For the first time in the history of our planet, knowledge about almost any field and aspect can be obtainedby the click of a key. And about most questions that don't require extremely sophisticated knowledge, we can also be very confident of the answers. We can also compare the answers from different sources and rate the various sources on degree of credibility.

To gain knowledge, one has to spend time and effort in study and understanding things. If one does not have a passion or interest in the subject, to that extent, the gathering of one's knowledge in the field becomes less complete. Knowledge helps us in securing better grades, understanding things better, doing better in whatever field we choose to employ ourselves in, surviving life's challenges better and in general leading a better and more fulsome life. Knowledge gives us power. Gaining wisdom pre supposes the existence of knowledge. We then apply our strength, conviction and judgement to apply that knowledge to our circumstance. Wisdom also has a moral angle to it. No matter how intelligent or knowledgeable a person is, if his application of that knowledge lacks morality or if he cannot differentiate right from wrong, he would not be called a wise person.

Knowledge makes one learned, it is very ego fulfilling. It tells us that there is so much that we know. Wisdom on the other hand makes us aware of the limits of our knowledge, it weakens the hold of the ego. Wisdom helps us to recognise our fallibilities. Knowledge can be attained by sitting in a library or by reading books. All it requires is that we have a questioning mind, and we then get our knowledge from books, scriptures, teachers, schools, our parents, basically everywhere. Wisdom cannot be obtained that way. How much ever we repeat what Krishna said, or Moses said or Zarathustra said, repeating their sayings will only have a limited role. While we have to imbibe the spirit of what they say, ultimately it is our wisdom that will

show us the way and not merely having the knowledge of what they said. Wisdom is far more than knowledge, it is organic, it is an existential experience. When all the knowledge that we have learned becomes our own realisation, it is wisdom. Therefore, a villager who is not very literate and has limited knowledge, could be very adept at the application of that knowledge, and therefore very wise. While a city dweller may have all the knowledge in the world, but may not be very wise. The world is full of people who are able to intellectualise without penetrating the deeper meaning and place of things. The man with wisdom on the other hand tries to understand the essence of things and recognises things in a bigger perspective, above their personal viewpoint.

To learn from a man of knowledge is indeed very easy, as communication through words is very easy. A man of knowledge can use the very best of words and communicate thoroughly and accurately whatever he wants to convey. But to learn from a man of wisdom is a very arduous process. Wisdom cannot be conveyed through mere words. A man of wisdom understands things and also knows the bipolar and transient nature of everything. He understands that while knowledge is important, its only the surface. What really matters is the inner knowledge, applied knowledge.

Wisdom implies that one is not a mere parrot, that one is not repeating what others have said earlier, but expressing oneself. Unless one is expressing something from his very core, he remains ignorant and in darkness. One may become a great scholar, an authority and a pundit, but until the time our knowledge has passed through our own inner being, it remains a mere copy.

Knowledge is theories about the truth; Wisdom is the experience of the truth. Knowledge is a hand me down; Wisdom is original. Knowledge is belief, where others say and we believe; Wisdom is "Aapo Deepo Bhav"….being your own lamp.

Annadanam Seva

Another one of our initiatives - Annadanam Seva - was started on 10th June 2018. As part of this initiative, Arya Samaj is distributing hot lunch outside the Samaj premises for all. Currently, this is planned to be a monthly program - every second sunday of the month and with your support and contributions we look forward to increasing the frequency of the same.

To contribute for this noble cause, please feel free to get in touch at our office or via email (asmiblr@gmail.com) or FB messenger or phone. Your participation and help is solicited.

Some glimpses from the same below -

संसार का प्रयोजन

– डॉ० अरुण देव शर्मा

आज भी लोग इस बात से अनजान हैं कि संसार क्यों बना है ? इसका प्रयोजन क्या है ? संसार में मनुष्य और अन्य जीव क्यों उत्पन्न हुए हैं और संसार को किसने और किसके लिए उत्पन्न किया है ? अब हम इन प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास करते हैं ।

संसार विभिन्न प्रकार की छोटी–बड़ी वस्तुओं से परिपूर्ण है । जिनमें अधिकांश वस्तुएँ प्राकृतिक हैं, जैसे कि पृथिवी, सूर्य, अग्नि, जल, वायु, वृक्ष–वनस्पति इत्यादि । इस प्राकृतिक जगत् में भी एक मानवकृत संसार है । जिसमें मनुष्य ने अनेक वस्तुएँ बनाई हैं, जैसे कि भवन, सड़कें, वाहन, कम्प्यूटर, विमान इत्यादि । क्या यें वस्तुए हम मनुष्यों के बनाए बिना, अपने आप बन सकती हैं ? नहीं । जब यें वस्तुएँ बिना हमारे बनाए स्वतः नहीं बन सकती तो यह असीम ब्रह्माण्ड अपने आप कैसे बन सकता है ? जो कि अत्यन्त व्यवस्थित, क्रमबद्ध, सप्रयोजन तथा विज्ञानपूर्ण ढ़ंग से बना हुआ है ।

यदि संसार को बिना किसी कर्त्ता के बना हुआ मानें तो यह युक्तिसंगत नहीं लगता । यह तो ऐसी ही बात है कि जैसे बहुत सारे मूलप्रकृति के कण, आपस में बुद्धिपूर्वक मिल–जुल कर, विभिन्न छोटे–बड़े पिण्डों, पदार्थों व प्राणियों के रूप में अपने आप बन गए हों । जब बिना कर्त्ता के कोई क्रिया नहीं होती तो बिना सृष्टिकर्त्ता के सृष्टि कैसे बन सकती है ?

यह सृष्टि विज्ञान, नियम, क्रम, बल और प्रयोजन आदि के अनुसार बनी हुई है । इसकी आन्तरिक व बाह्य संरचना अत्यन्त सूक्ष्म, जटिल तथा विज्ञानपूर्वक है । जिसको देखकर ऐसा नहीं लगता कि यह अपने आप बन गई हो या किसी अचानक घटित किसी बड़ी घटना का परिणाममात्र हो । हमारे पूर्वज ऋषियों ने इस रहस्यमय संसार का सम्प्रज्ञात समाधि की अवस्था में साक्षात् प्रत्यक्ष किया था । जिसका उन्होंने अपने योग दर्शन आदि शास्त्रों में वर्णन किया है । हम सम्पूर्ण अस्तित्त्व को मात्र आधुनिक विज्ञान, इन्द्रियों तथा यन्त्रों से नहीं जान सकते । संसार को वास्तविक रूप से देखने के लिए हमें इसे ऋषियों की भाँति प्रत्यक्ष करना होगा ।

जिन मूलकणों या प्रकृतिरूप मूलद्रव्य से यह संसार बना हुआ है, वह जड़ पदार्थ है । जड़ पदार्थ में कुछ बनने की अपनी कोई इच्छा या अनिच्छा नहीं होती । उसमें कुछ जानने व प्रयत्न करने की प्रवृत्ति भी नहीं देखी जाती तथा कोई सुख व दुःख की अनुभूति या कुछ जानने व क्रिया या गति करने की स्वतन्त्रता भी नहीं होती । यें गुण या विशेषताएँ प्रकृति में नहीं होती । यें विशेषताएँ चेतन तत्त्वों में पाई जाती हैं । संसार के स्वरूप तथा प्रयोजन को महर्षि पतञ्जलि ने इस प्रकार बतलाया है –

प्रकाशक्रियास्थितिशीलं भूतेन्द्रियात्मकं
भोगापवर्गार्थं दृश्यम् ।

– योगदर्शनम् २.१८

अर्थात् यह दृश्य, दिखाई देने वाला संसार (प्रकृति) से बना हुआ, त्रिगुणात्मक है । संसार की प्रत्येक वस्तु सत्त्वगुण, रजोगुण व तमोगुण; इन तीन गुणों से मिलकर बनी हुई है । सत्त्वगुण प्रकाश स्वभाव वाला है, रजोगुण क्रिया स्वभाव वाला है और तमोगुण स्थिति स्वभाव वाला है । यह संसार पञ्च स्थूलभूत (अग्नि, जल, पृथिवी, वायु, आकाश) व पञ्च सूक्ष्मभूत (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द) वाला तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रियों, पञ्च कर्मेन्द्रियों व मन–बुद्धि–अहंकार रूप है । संसार के दो प्रयोजन (उद्देश्य) हैं, एक – सब जीवों को भोग (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श व शब्द विषयों का अनुभव) कराना और दूसरा प्रयोजन है – अपवर्ग (मोक्ष) प्राप्त कराना ।

उपर्युक्त योगसूत्र में यह कहा गया है कि संसार हम मनुष्यों के भोग और मोक्ष के लिए है । हम जब तक संसार के विषयों का भोग करते रहेंगे, उनसे सुख लेते रहेंगे तब तक संसार में हमें भोग मिलते रहेंगे । और जब हम संसार के भोगों से विरक्त होकर इसके

रचयिता को तथा इसमें अपने अस्तित्व को भी जानना चाहेंगे तो हम संसार से मोक्ष भी पा सकतेहैं । जिसके लिए हमें संसार में इन तत्त्वों की भूमिका को भी समझना होगा ।

जैसे मेज, कुर्सी, कार, स्कूटर आदि जड़ वस्तुएँ होने से अपने आप नहीं बनते और न ही स्वयं गति करते हैं, बल्कि हम चेतन मनुष्यों के द्वारा इनका निर्माण व प्रयोग किया जाता है । इसी प्रकार सृष्टि के मूल द्रव्य से संसार अपने आप नहीं बनता और न हम सब मनुष्य मिलकर इसको बना सकते हैं । अब केवल ईश्वर ही एक ए ेसा चेतन तत्त्व शेष रहता है कि जिसने इसका निर्माण किया है । उसने अपने अनन्त सामर्थ्य से मूलद्रव्य प्रकृति को लेकर इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया है । वही परमेश्वर सृष्टि को उत्पन्न करके इसे धारण भी कर रहा है । संसार की उत्पत्ति, पालन व प्रलय करना, हम सब जीवों को शुभ-अशुभ कर्मों का फल देना तथा हमें वेदों का ज्ञान देना आदि कार्य एक ईश्वर ही करता है ।

ईश्वर के विषय में संसार में बहुत भ्रांतियाँ हैं । जैसे कि ईश्वर को भिन्न-भिन्न स्थानों, आसमानों में रहने वाला मानना, मनुष्यों जैसा ए कदेशी और दूसरों की सहायता लेने वाला मानना तथा उसे विभिन्न रूपों, प्रतीकों तथा व्यक्ति-विशेषों के रूप में अवतरित हुआ मानना इत्यादि मान्यताएँ वेदविरुद्ध तथा तर्कसंगत न होने से असत्य हैं ।

वेदों तथा ऋषियों के शास्त्रों में ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का वर्णन मिलता है । उनके अनुसार ईश्वर अवकाशरूप-आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त है । वह सृष्टि के मूलद्रव्य प्रकृति व संसार के सूक्ष्म-स्थूल सभी पदार्थों में व्यापक है । जिसमें ज्ञान, विज्ञान, बल, क्रिया, आनन्द, न्याय आदि असंख्य गुण हैं । यह संसार स्वतः निर्मित नहीं हुआ है बल्कि उस सर्वव्यापक प्रभु ने इसको ऐसा बनाया है ।

अब प्रश्न उठता है कि उस सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने सृष्टि को क्यों उत्पन्न किया है ? परमेश्वर तो सर्वत्र आनन्द से परिपूर्ण है और उसे सब वस्तुएँ तथा सुख प्राप्त हैं । उसके पास किसी वस्तु और सुख का अभाव भी नहीं है । फिर वह खुद के लिए तो सृष्टि बनाएगा नहीं । फिर उसने किसके लिए सृष्टि की रचना की है ? ईश्वर से भिन्न दूसरा पदार्थ प्रकृति है, जो कि जड़ अर्थात् ज्ञानरहित है । ज्ञान-अनुभुति रहित होने से वह सुख-दुःख का कोई अनुभव भी नहीं कर सकती । इसलिए सृष्टि, सृष्टि के लिए भी नहीं हो सकती है । अब शेष तीसरा पदार्थ है - आत्मा । जो कि संसार में भोग और मोक्ष को प्राप्त कर सकती है ।

सभी मनुष्य और अन्य प्राणियों के शरीरों को विभिन्न आत्माएँ ही धारण करती हैं । आत्मा निराकार, एकदेशी और असंख्य हैं । आत्मा शरीर नहीं हैं अपितु शरीर को धारण करने वाली हैं । अपने पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार सर्वसाक्षी ईश्वर हमें विभिन्न प्राणियों के शरीरों में जन्म देता है । हम सब आत्माएँ अपने कर्मों के अनुरूप सुख-दुःख का भोग कर रही हैं । जैसे ईश्वर और प्रकृति का कभी विनाश नहीं होता वैसे ही हमारा भी नहीं होता । हम भी इनकी तरह सदा कहीं न कहीं विद्यमान रहती हैं ।

हम आत्माओं के पास सुख नहीं है । परमात्मा ने प्राकृतिक संसार को हमारे लिए ही बनाया है । जिससे हम अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार दो सुख प्राप्त कर सकते हैं । वें सुख हैं - अनित्य भोग-सुख और नित्य मोक्ष सुख । संसार के विषय भोगों से मिलने वाले सुख सीमित और क्षणिक है । जबकि मोक्ष का सुख ब्रह्मसुख है । वह असीमित और शाश्वत है । वह नित्य और पूर्णसुख है । भौतिक सुख सांसारिक है और मोक्ष में परमात्मा के योग का सुख आध्यात्मिक है । मोक्षसुख परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी तत्त्व में नहीं है ।

हममें से कोई भी मनुष्य सीधे मोक्षसुख को नहीं पा सकता । हमें संसार के मार्ग से ही वहाँ तक पहुँचना है । संसार में भी दुःखपूर्वक रहकर तो जीना सम्भव नहीं है । इसलिए संसार में सुखपूर्वक जीने के लिए हमें अनेक आवश्यक जड़-चेतन साधनों की आवश्यकता होती है, जैसे कि शरीर, भोजन, वस्त्र, घर, परिवार, सामान, परिजन, बन्धु, मित्र आदि । जिन्हें पाने के लिए हम सब सदा प्रयत्नशील रहते हैं ।

हम सब आत्मा वस्तुओं तथा व्यक्तियों से सुख ही चाहते हैं और किसी से कहीं भी कोई भी दुःख नहीं चाहते । ईश्वर ने हमारी इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए ही यह संसार रचाया है । क्योंकि वह हमारा सदा का माता-पिता है, गुरु और शासक है । ईश्वर यही चाहता है कि उसकी सनातन जीवरूप प्रजा, सन्तान सब दुःखों से छूट जाए और पूर्णरूप से सुखी हो जाए । किन्तु हम सब जीव ईश्वर के समान इतनी व्यापक तथा निष्पक्षदृष्टि नहीं रखते । परमात्मा की इस दिव्य-दृष्टि को पाने पर ही हम इस जीवन को सार्थक कर सकते हैं ।

हम जन्म-जन्मान्तरों से अज्ञान के अंधकार में रहते हैं । अज्ञान या अविद्याजन्य अहंकार, राग-द्वेष तथा चिन्ताओं के अंधकार में किसी को इस अंधेरे के सिवाय कुछ नहीं दिखता । जिसमें रहने वाले मनुष्य भाँति-भाँति के प्राणियों के शरीरों में जन्मते-मरते रहते हैं । असंख्य दुःख-पीड़ाओं को जन्मों-जन्मों तक पाते रहते हैं । फिर भी इस अंधेरे से बाहर नहीं आते । यदि इस बार इस मनुष्य-जन्म में भी इस अंधकार से बाहर नहीं निकले तो हमारा यह मनुष्य जन्म व्यर्थ हो जाएगा ।

हमें यह मनुष्य शरीर और बुद्धि आदि साधन बहुत उत्तमकर्मों से मिले हैं । असंख्य अविद्याजन्य बुरे कर्मों से असंख्य कुसंस्कार बन जातेहैं । जिनसे पापी मनुष्य की दृष्टि दिव्य बनने के बजाय संकीर्ण और पक्षपाती बन जाती है । जिस कारण वह अत्यन्त अभिमान, राग-द्वेष और दुष्कर्मोंके अंधकार में फँस जाता है । इस प्रकार वह अपनी आत्मिक उन्नति में सबसे बड़ा बाधक खुद बन जाता है । जो भी अच्छे-बुरे कर्म हम कर रहे हैं । उन कर्मों के शुभ-अशुभ संस्कार हमारे चित्त में संचित हो रहे हैं । वही संस्कार हमारे भावी जीवन और जन्म की दिशा और दशा तय करेंगे ।

हम सांसारिक सुख-साधनों व व्यक्तियों से अपने समस्त दुःख छुड़ाना चाहते हैं और इन्हीं से नितान्त सुखी भी होना चाहते हैं । जबकि यह सामर्थ्य इनमें से किसी में नहीं है । वह सामर्थ्य तो ईश्वर में ही है । उसी को पाने में हमारी मुक्ति है । एक वेदमन्त्र इसमें प्रमाण है -

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था
विद्यतेऽयनाय ।।

- यजुर्वेद ३१.१८

अर्थात् जैसे सूर्य अन्धकार से पृथक् है वैसे ही यह महानतम् परमात्मा अज्ञान-अन्धकार से सर्वथा पृथक् है । जो इस परब्रह्म परमेश्वर को जान लेता है, वही मृत्यु आदि सब दुःखों से छूट जाता है । ईश्वर को जानने के अतिरिक्त, सर्वदुःखों से मुक्त होने का अन्य कोई मार्ग नहीं है ।

'हर मनुष्य-जन्म में हम संसार को ही पाने के लिए प्रयत्न क्यों करने लगते हैं । संसार से श्रेष्ठ भगवान् को पाने का पुरुषार्थ हम क्यों नहीं करते ?' जन्म लेते ही हमें संसार के सुन्दर रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दसुख क्यों प्रिय लगने लगते हैं और क्यों हम इन्हें भोगने के मार्ग पर ही चल पड़ते हैं और परमात्मा का योगमार्ग नहीं अपनाते ?' इस विषय में हमें बहुत चिन्तन करना चाहिए । यह बात तो सही है कि "जिसकी रचना इतनी सुन्दर, वह कितना सुन्दर होगा ?" परमात्मा की रची हुई यह सृष्टि हमें जन्म-जन्मान्तरों में अच्छी ही लगेगी । किन्तु हमें इसे मात्र भौतिक-सुन्दरता की दृष्टि से ही नहीं देखना चाहिए । इसके आध्यात्मिक प्रयोजन मोक्ष को भी देखना चाहिए । जिसके लिए अपने वर्त्तमान जीवन पर भी विचार करें कि उसे हम कैसे जी रहे हैं, हम जीवन में क्या चाहते हैं ? क्यों चाहते हैं इत्यादि ।

इस मनुष्य शरीर में जन्म लेते ही हम सबसे पहले संसार के ही सम्पर्क में आते हैं । ईश्वर ही हमें इस शरीर और संसार का दर्शन कराता है । जिसमें क्रमशः हमारा परिजनों तथा संसार के विभिन्न व्यक्तियों व वस्तुओं से सम्पर्क होता है । पिछले जन्म के कर्मानुसार ईश्वर हमें इस बार भी शरीर, परिजन, शिक्षा, धन-सम्पत्ति आदि साधन प्रदान करता है । अब जैसे परिवेश में हम पलते-बढ़ते हैं, उसमें जैसा हमारे परिजन आदि जानते-मानते, बोलते और काम करते हैं वही सब हम भी करने लगते हैं और बड़े होते-होते हम भी उनके जैसे ही बन जाते हैं ।

बचपन से व्यक्तियों तथा वस्तुओं का हमारे मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है । प्रायः जैसे हमारे माता-पिता-शिक्षक-सम्बन्धी तथा मित्र आदि हमें मिलते हैं । वें जैसे विचार, व्यवहार और कर्म करते हैं, उन्हें वैसा करते हुए देखकर हम भी उन्हीं की तरह सोचने, बोलने और कर्म करने लगते हैं । उनका ही हम जीवनभर अनुकरण करते रहते हैं, उन्हें ही अपने आदर्श मान लेते हैं, चाहे भले ही वें आदर्श हों या न हों ।

एक सुख तो धन, परिवार, पद, सम्मान आदि से हमें मिलता है कि जिसको हम माता, पिता, बन्धु, मित्र और भोजन, वस्त्र, धन-सम्पत्ति व सुविधा-साधनों से पाते रहते हैं । दूसरा सुख वह है कि जो प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने से मिलता है । जिसे धर्मात्मा प्रभुभक्त योगी पाते हैं ।

संसार में जितने भी जीव हैं उनमें से हम मनुष्य ही एक ऐसे जीव हैं कि जो संसार के प्रयोजन को जानकर उसे पूरा कर सकते हैं । वेदोक्त ईश्वर के अस्तित्त्व को स्वीकार करने पर ही हमारी आत्मिक उन्नति हो सकती है । हमारी आत्मिक उन्नति ही इस संसार का मुख्य प्रयोजन है । ईश्वर की अहिंसा, सत्य आदि आज्ञाओं या इन महाव्रतों का हम यदि पालन नहीं करते और मनमाने व्यवहार, आचरण और कर्म करते हैं । तो इस प्रकार विषयभोगों का ही अति अभ्यास होगा । जिससे मन-वाणी तथा इन्द्रिय आदि साधनों का अत्यन्त दुरुपयोग ही लोग करते हैं । वें अनियन्त्रित, चञ्चल व मूढ़ मनुष्य बन जाते हैं । ईश्वर ऐसे विषय-भोगों में आसक्त मनुष्यों को बारम्बार जन्म आदि दुःख-भोग ही देता रहता है । और जो मन-इन्द्रिय आदि साधनों का सदुपयोग करने वाले मोक्ष के पात्र बन जाते हैं । उनके लिए ही यह संसार मुक्ति का साधन बन जाता है । योगी संसार में अहिंसा और सत्य आदि योग का अभ्यास करके इससे परमात्मा को पा लेते हैं और अन्य इतरजन संसार के सुखों पर ही मोहित रहते हैं और उनके भोगों का ही अभ्यास करते रहते हैं ।

यदि हम अपना अधिकाधिक समय और मन इन धन-भोग और सम्मान आदि सांसारिक सुखों को पाने में ही लगाते रहेंगे तो मात्र इन क्षणिक विषय-सुखों को ही पाएँगे । और यदि अहिंसा, सत्य आदि योग का मन-वाणी व शरीर से निरन्तर अभ्यास करेंगे तो नित्य ब्रह्मसुख को पाएँगे । बिना अहिंसा आदि योग का अभ्यास किए हमें ब्रह्मानन्द की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती । जो कि हमारा व संसार का मुख्य प्रयोजन है ।

Satyarth Prakash
The Light of Truth
An Introduction

– Swati Gupta

A person who is interested in knowing the TRUTH, this book is for him/her. Late Shri S. Rangaswamilyengar (a lawyer, journalist and former of The Hindu) praised the book, saying that ***"It contains the wholly rationalistic view of the Vedic religion."***

Arya Samajis are often exhorted to study and follow the principles in Satyarth Prakash which is one of the greatest gift to us and works done (among so many other noble deeds) by Maharshi Swami Dayanand Saraswati. The book has changed lives of many. ***Let's try to understand why the study of Satyarth Prakash is so important for us.***

This is the book which encapsulates in detail how to live a life of truthfulness and righteousness in every stage of human life from birth till death in society (samaj) as per the Vaidic principles. Swamiji was not only a great scholar but was an enlightened being who used to stay in higher level of consciousness and hence the masterpiece by him guides us to become logical and fearless in our spiritual pursuits and not follow anything blindly without experiencing.

As the name suggests - Satyarth Prakash - that is "Presenting the Truth As It Is" in the Vaidic literature, Swamiji writes in preface of the book - "the main objective of my writing this book is to elucidate true principles, i.e. to declare as truth what is truth and to declare as untruth, what is untruth. Truth lies in speaking, writing or believing in connection with a thing as it actually is."

In the book therefore Swamiji has not told us anything on his own but has presented the Vaidic knowledge of rishis truthfully in logical and scientific manner. The arrangement of chapters is in a progressive manner of covering about conducts in four ashrams (Brahmacharya, Grihasta, Vanaprastha and Sanyas), as well as how the society should conduct its administration, governance and socio- economic organizations, ethics of good conduct, everything is covered the Vaidic way. Creation and dissolution of universe is explained scientifically as per Vedas along with ways of enlightenment and worshipping of One God with love and without fear as propounded spiritually in Vedas.

The chapters known as Samullaas (sammaullaasa) are in question-answer format, which is very interesting way of writing which connects with readers instantly who have same questions and after getting the answer they are "thrilled with excitement" of knowledge thus gained or doubt thus removed. And that is what **samullaasameans - highly exhilarated state.**

It is the condensed knowledge of Veda and Vaidic culture. A masterpiece helping us head life away from darkness to light, from false belief to reality, from blind following to logical accepting, from fearfulness to fearlessness from ignorance to knowledge and wisdom and from bondage to liberation through its unfolding of TRUTH and ONLY TRUTH.

Should everyone not read such a book?

The book is available in Arya Samaj Indiranagar

library and also online.The audio and video version of book are available onYoutube.Satyarth Prakash app is also now available in Play Store https://play.google.com/store/apps/details?id=com.arya.samaj.rvsp&hl=en_IN

With this introduction about the Satyarth Prakash, in this edition of VaidicDhwani we touch upon the important subject of One God with different names and meaning of Aum as explained in chapter one and hope that this basic sharing of knowledge will inspire the readers to pickup the book and start reading it and absorb the knowledge directly from the master piece.

References / Sources

1. English Translation of Satyarth Prakash - by Pt Ganga Prasad Upadhaya
2. http://satyarthprakash.in
3. Wikipedia
4. Author is inspired by lectures viewed on You tube by Ashish Darshanacharya on Introduction to Satyarth Prakash, to study the book (https://www.youtube.com/watch?v=0W7x9ZRS0Oc)

Satyarth Prakash - Chapter One

Chapter One of Satyarth Prakash tells us that there is only One God who has many names and contains more than 100 names of God with their meaning. These are the adjective (गुणवाचक) based names and explanation has been given on how they have been derived from the original root letter of Sanskrit language.

The chapter starts with meaning of God's supreme name "OM" (ओ३म) which comprises of three letters A, U, M.

Letter "A - अकार "stands for Virat , Agni, Vishwa

Letter "U - उकार " stands for Hiranyagarbha, Vayu, Taijas

Letter "M - मकार " stands for Ishvara, Aditya, Prajna

There are mantras and shlokas from Vedas and Upanishads quoted to tell us **that OM or AUM is supreme name of God**, who is omnipresent (like ether), who is immortal and all the Vedas and Shastras declare OM as the primary and natural name of God. All other names are secondary names. Whom all devotion and righteous actions lead to, and for whose realization, the life of Brahmacharya (Chastity) is led, is called Om.

We are told as quoted from Manu Smriti that "He, Who is the Teacher of all, Subtler than the subtler, Resplendent, Who can be known through understanding begotten of Samadhi, i.e. 'superior

Facts about Satyarth Prakash

Was published in 1875

Translated in 23 languages including foreign languages - Hindi, English, Sanskrit, Urdu, Sindhi, Panjabi, Bengali, Marathi, Telugu, Tamil, Malayalam, Gujarati, Kannada, Oriya, Assamese, Nepali, German, Dutch, French, Swahili, Arabic, Burmese, Chinese, Thai and even Braille copy is also made available for the benefit of blind.

It is said that next to RamcharitManas, Satyarth Prakash is the most popular book in Hindi language.

The Book is often compared with Das Kapital written by Karl Marx which shook the Europe, similarly **Satyarth Prakash shook the cultural, social and economic thinking of India.**

Sathyarth Prakash was written as per the request made by Raja JayakrishnaDas who was an ardent admirer of Swami Dayanand. He was a District collector of Varanasi and insisted that Dayanand compile his ideas in book form so that those who had no privilege of listening to Dayanand could derive benefits. In order to help Dayanand to accomplish his task he provided the facility of a writer by name Chandrasekhara Shastri to whom Swami Dayanand therefore dictated and Shastri wrote down. **This way the work started on 12th June 1874 and got concluded on September 1874, within 4 months time !!!**

condition' of the soul, when the mind is perfectly concentrated by means of psychical practices, is the **Great Being.**"

Swamiji further explains how the different adjective words used in prayer, meditation, communion such as Omnipresent, Omniscient, Eternal and Creator etc. are names of God but the words like Vayu, Virat, Agni, Bhumi are referred to God only when used with respect to above mentioned adjectives and when used as things created, protected or sustained, disintegrated etc. (that is something finite and visible), then they cannot be taken to signify God.

He quotes example from mantras from Veda in which the same word, say "Agni" is used for God in one mantra and for "visible thing - agni" in another mantra. Hence the context in which a word is being used is very important to understand whom it is referring to.

Chapter	Topic Covered
One	Meaning and explanation of AUM and other names of Ishwara, the One God of universe
Two	Provide guidance on upbringing of children
Three	Formal Education and disciplines of Brahamacharya
Four	Grihasth Ashram - Marriage and household
Five	Vanaprastha Ashram - Retirement and renunciation and social service
Six	Socio Economic organization, government and administration
Seven	About God , Soul and Vedas
Eight	Creation, Sustenance and Dissolution of the world
Nine	Knowledge and ignorance and freedom and bondage
Ten	Ethics of good conduct
Eleven - Fourteen	comparative study of different religious faiths and sects
Appendix	Beliefs and Disbeliefs

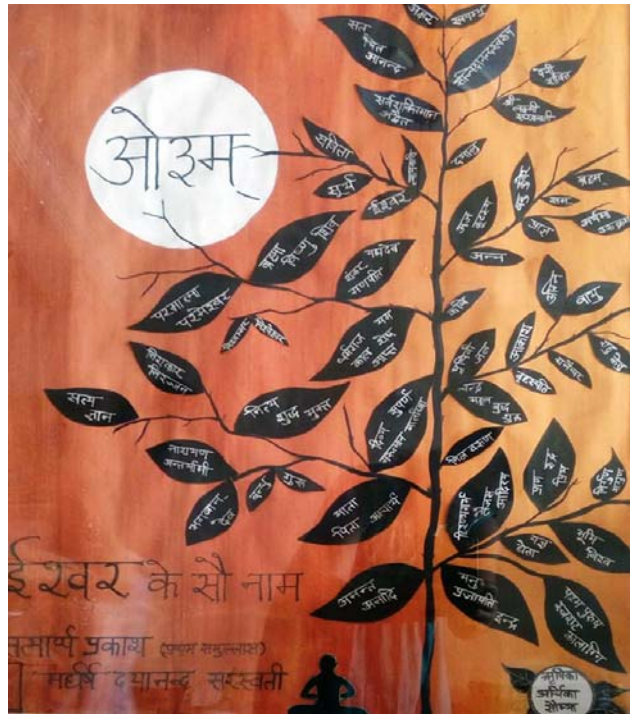

The names like Ganesh, Ganapati, Vishnu, Shiv, Shankar all are names of God. But as a normal human being, when we hear these words we relate them to some great people in our heritage and cultural history. These were spiritual and enlightened people who possessed noble and good qualities and worked for the goodness of beings. But when we analyse the names etymologically we realise that God is One and these names are adjective based names of an omnipresent, omnipotent, omniscient entity and do not represent any mortal being as God.

What do various names signify

Ganesh = Gan + Isha = group + master = Master of group - God who is master of All, because God is omnipotent, omnipresent and omniscient.

Shankar = Sham (kalyaan) karotiiti = God who is for well being of all.

Bhagwaan = One who has bhag (which means - aishvarya, prosperity, knowledge, dharm, vairagya) i.e. the God who possess all these.

The three names of God - **Brahma, Vishnu** and **Shiv** mean who is **"Greatest One or one who grows, "All Pervading One"** and **"Most auspicious** "respectively as created from Sanskrit root words **brih**, **vis** and **shi** respectively. The different names of one and the same God to provide us a channel to energise our energies in

remembrance of God by concentrating on the qualities these names denote. And its only when we chant or meditate upon these words during our prayers keeping in mind the qualities, we will be able to praise God in true sense and connect deeply. We will also slowly experience the part of those godly qualities flowing in us also taking us nearer to God and making us a better human being.

By reading the chapter you will find yourself at a very higher level of understanding as earlier existing any false notions or untrue meanings will be erased from your mind. Names of God are Surya, Chandra, Sukhra, Brihaspati, Rahu, Ketu, Shanichar, Prithvi, Vasu!!! His names are Matr, Pitr, Acharya, Pitamah, Guru, Bandhu!!! God is known as Dev, Mahadev, Lakshmi, Shri, Vayu, Mitra, Varun, Indra, Jal, Agni, Anna, Savita etc… God is Ishwara, Anaadi, Anant, Shuddh, Buddh, Nitya, Nirakar, Niranjaan, Svayambhu and is also known by these names too.

Explore the pages of first chapter of Satyarth Prakash and get enlightened with 100 names of God, by searching them and knowing their meanings. And also meditate on God's supreme name - AUM.

Workshop - All is Well

Arya Samaj Indiranagar conducted an interactive workshop for Women titled "All is Well - Art and Science of Personal Well being" on 5th May 2018.

This workshop was facilitated by Nidhi Chawla, who is an Erickson International certified Life Coach, psychotherapist and life skills trainer with over 20 years in the industry.

The workshop focussed on engaging mind, body and emotion and was designed with tools from movement therapy, art therapy and positive psychology with an aim to help participants to reconnect with their core (inner self).

Some glimpses from the same below -

Thriving Adolescents

Arya Samaj Indiranagar also conducted a 3 day interactive workshop for children titled "Thriving Adolescents" on 18th, 29th and 20th May 2018.

This workshop was facilitated by Nidhi Chawla, who is an Erickson International certified Life Coach, psychotherapist and life skills trainer with over 20 years in the industry.

This workshop used theatre, positive psychology and solution based approach to help develop self awareness, empathy, critical thinking, creative thinking, interpersonal training, coping with stress and emotions in children.

It was a fun-filled learning program aimed at equiping children with skills to face life with confidence.

Some glimpses from the same below -

Gayatri Maha Yajna

Continuing with our tradition of the bi-annual Gayatri Maha Yajna and the Ved Shatak Yajna, Arya Samaj Indiranagar organized the "Gayatri Maha Yajna" on Saturday, the 7th and Sunday, 8th April 2018.

Some glimpses from the same below -

ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

MANDIR OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Smt. Harsh Chawla – harshsuraj@hotmail.com

VICE PRESIDENT
Smt. Sneh Lata Rakhra

VICE PRESIDENT
Sh. Narendra Arya – narendra.arya@gmail.com

SECRETARY
Sh. Sandeep Mittal – sandeepmittal5@gmail.com

TREASURER
Sh. Amar Sharma – amarpita13@gmail.com

JOINT SECRETARY
Sh. Ravi Ochani – ravi.ochani@gmail.com

EDITOR
Smt. Harsh Chawla

TRUST OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Sh Himanshu Aggarwal

SECRETARY
Sh Vivek Chawla

TREASURER
Sh Narendra Arya

ACKNOWLEDGEMENT
Vaidic Dhwani acknowledges with thanks the Hindi typesetting by Dr. Arun Dev Sharma and the layout design by Shri Yashodhara S

ARYA SAMAJ MANDIR
7 CMH Road, Indiranagar,
Bangalore 560 038
Phone 2525 7756
asmiblr@gmail.com
www.aryasamajbangalore.in

Like us @ www.facebook.com/asmiblr
Join our Facebook group - "Arya Samaj Indiranagar Bangalore" for regular updates

Cover Page Mantra has been taken from Rig and Atharva Veda and checked by Dr Arun Dev Sharma

Vaidic Dhwani is a quarterly newsletter published by ARYA SAMAJ MANDIR INDIRANAGAR (ASMI), mailed free of cost to members and interested individuals. It is for private circulation only. To request a copy, simply mail us your complete postal address. *Vaidic Dhwani* is also available on the ASMI website **www.aryasamajbangalore.in**

Views expressed in the individual articles are those of the respective authors and not of ASMI. No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system, scanned or transmitted in any form or by any means electronic, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of ASMI.

SERVICES OFFERED

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR

- **Daily Havan** from 7.30 to 8.00 am
- **Weekly Satsang**
  comprising havan, bhajans and discourses every Sunday from 10 to 11.45 am. Every last Sunday of the month, the programme extends to special discourse and Preeti-bhoj.
- **Anna Danam Seva** - Hot Food distribution for all - Every second sunday of the month
- **Annual Festivals - Varshikotsav, Vaidikotsav, Gayatri Maha Yajna and Shivir**
  2-3 days of programmes of havan, bhajans, discourses and camps focussed on vaidic philosophy by renowned scholars conducted once every quarter

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR OR YOUR VENUE

Namkaran & Annaprashan
- naming & first grain

Mundan & Upanayan
- head shaving & thread

Vivah - marriage with certificate

Griha Pravesh - house warming

Antyeshti - funeral rites

Shudhdhi - reversion from other faiths to Vaidic dharma with certificate valid in court of law

Havan - for any ceremony on any occassion, at any place

Contact
1) Smt Harsh Chawla 99726 14241
2) Pandit Brij Kishor Shastry 97410 12159
3) Pandit Arun Dev Sharma 98446 25085

YOGA & PRANAYAM

- **Yoga** (Evening) - 45 days
  Time : Every Mon/Tue/Thu/Fri - 7.00 - 8.30 pm
- **Pranayam** - 11 days
  Time : Mon to Sat - 6.00 - 7.15 am (Morning)
  & 7.00 - 8.30 pm (Evening)
  Venue : Basement Hall
  Sri Nanjunde Gowda 98458 56204

MEDITATION

Manasa Light Age Foundation - Starting from first Wednesday of every month and every Wednesday
Time : 7 - 8 pm
Venue : Arya Samaj
080 28465280, 9900075280

MUSIC

- **Vocal**
  Time : Sat & Sun 2 - 4 pm
  Smt Seethalakshmi 96200 56218
- **Kathak Dance**
  Time : Sat 12 - 2 pm & Sun 7 - 8.30 pm
  Smt Lakshmi Praroha 98447 31615
- **Instrumental Music**
  Time : Tue & Sat 4.30 - 7.30 pm
  Sri N K Babu 98441 22738